चिराग जैन

अनुभूति

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Chirag Jain 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-599-1

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay
Illustrations: Labdhi Mehta.

First Edition: August 2025

हर एहसास एक निशान छोड़ता है।

अनुभूती...

भूमिका

"अनुभूती" केवल कुछ कविताओं का संग्रह नहीं है, यह मेरे जीवन की उस भावनात्मक यात्रा का दस्तावेज़ है जिसे मैंने जिया, महसूस किया और शब्दों में ढाला। एक मासूम बालक से लेकर एक समझदार इंसान बनने तक जैसे-जैसे उम्र बढ़ी, वैसे-वैसे मेरे भीतर जन्म लेने वाली भावनाएँ भी गहराई लेती गईं।

मासूमियत से मोहब्बत तक, टूटन से उम्मीद तक — हर चोट, हर मुस्कान और हर आशा की अभिव्यक्ति है…"अनुभूती"।

पुस्तक का पहला खंड "मासूमियत" बचपन की उन सरल लेकिन गूढ़ अनुभूतियों का प्रतिबिंब है जो एक बालक अपने घर, समाज और दुनिया को देखकर महसूस करता है।

फिर आता है "प्यार की पहली झनक", जिसमें दिल की वो पहली धड़कनें हैं जो किसी के प्रति खिंचाव में बदलती हैं और हमें पहली बार इश्क़ का स्वाद चखाती है।

इसके बाद का खंड "ज़ख़्म" उन टूटे पलों की अभिव्यक्ति है जहाँ दिल टूटा, विश्वास डगमगाया और अकेलेपन ने घेर लिया।

लेकिन जहाँ अंधेरा होता है, वहीं आशा की एक किरण भी होती है। यही दर्शन है "उम्मीद" खंड का, जिसमें खुद को समेटकर फिर से जीने की चाह झलकती है।

और अंत में, कुछ बिखरी हुई सी, लेकिन दिल के बेहद करीब पंक्तियाँ, जो हर भावना से परे है—इन्हें “कुछ पंक्तियाँ ऐसी भी” नाम दिया है।

यह किताब एक भावनात्मक रोलर कोस्टर है—जहाँ हर कविता एक मोड़ है, हर अनुभूति एक पड़ाव।

यह मेरी आँखों से देखी गई दुनिया की, और दिल से महसूस की गई ज़िंदगी की कहानी है।

- चिराग जैन

मुझे फिर से प्यार करना सिखाने के लिए

मेरी प्रिय पत्नी किंजल को....

प्रस्तावना

अनुभूती – एक अनुभव, एक एहसास, एक संवेदना, एक भाव और बहुत कुछ...! लेकिन इन सब भाव को अगर आप शब्दों के शरबत में मिलाओगे तो जो बनेगा वो बेमिसाल और बेहतरीन ही होगा। अनुभूती काव्यसंग्रह वो शरबत का गिलास है, जिसे चखने के बाद उसका नशा या उसकी धुंद आपके चेहरे पे और नजर में समा जाएगी। अनुभूती काव्यसंग्रह के कवि श्री चिराग जैन ऐसी ही कुछ सुंदर कविताएँ आपके लिए इस काव्यसंग्रह में प्रस्तुत करते है।

यह काव्यसंग्रह विभिन्न कविताओं का एक ऐसा समूह है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे आशा, निराशा, प्रेम, दुख और सफलता पे प्रकाश डालता है। इस संग्रह में कवि अपने अनुभवों, भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त करते है और पाठक उनके इस एहसास को महसूस कर सकता है। ऐसे एहसास को जो शब्दों में पिरोके आपके सामने पेश कर सकता है वो होता है कवि। ऐसी ही काबिलियत रखते है इस काव्यसंग्रह के कवि श्री. चिराग जैन।

इस काव्य संग्रह मे आपको एक पन्ने पे गुड़िया पे कविता मिलेगी तो किसी पन्ने पे बारिश की साजिश नजर आएगी। कही पे प्यार का एहसास महसूस होगा तो कही पे दिल टुटने का दर्द, कही पे तन्हाईका मौसम है तो कही पे उम्र का हिसाब और हर कविता एक से बढ़कर एक लाजवाब है, एक ही इन्सान के इतने सारे एहसास आप इस संग्रह में देखेंगे और पढ़ेंगे।

ये काव्यसंग्रह केवल पढ़ने के लिए नहीं बनाया है अपितु आप इसको महसूस किजीएगा अपने दिल से और सिर्फ दिल से ही। मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूँ की इस काव्यसंग्रह की प्रस्तावना लिखने का अवसर मुझे कवि श्री. चिराग जैन जी ने प्रदान किया। मैं पाठकों से गुजारिश करुंगी की ये काव्यसंग्रह दिल से पढ़ें और कवि की अनुभूति समझने का प्रयास करे।

- कोमल भाटकर

अनुक्रमणिका

मासूमियत

माटी की एक गुड़ियाँ 3

घर....!! 4

एक ख्वाब… 5

मैं कभी रुकता नहीं 7

अग्नि परीक्षा 9

हिम्मत 11

सबर 13

प्यार की पहली झनक

हमारा है… 17

तुम आओगी क्या ?? 18

बस बैठेंगे 20

फुलवारी 22

कहानी खट्टे-मीठे प्यार की… 24

आज उन्होंने मुझे डांट लगाई है… 27

मेरे चाँद की कहानी… 29

ज़ख्म

तुम ना मिली... 34

पुरानी चोट याद आई है…! 36

कोई नहीं... !!! 37

पागल हुए जा रहा हूँ.. 38

बचाया ना कर… 40

चले जा रहा हूँ। 41

उसके पास तू.. 43

मरहम

यह कौनसी है बारिश..??.. 46

तन्हाई का मौसम.. 48

आखरी कोश

चलो एक बार फिर मिलते हैं। 51

उम्मीद

यूँ ही गुज़र जाते है.. 54

कुछ पंक्तियाँ ऐसी भी

आभार.. 71

मासूमियत...

माटी की एक गुड़ियाँ

मुस्कुराती, रंग बिरंगी,
खुशियों की पुड़ियाँ,
माटी की एक गुड़िया।

बचपन की है पक्की सहेली,
मासूमियत की ना कोई पहेली,
सपनों के सफर की साथी चिड़िया,
वह माटी की एक गुड़िया।

बचपन के हर राज़ की है रखवैया,
जिसके लिये ढूँढ़े दुल्हा सबसे बढ़िया,
नन्हीं सी परी जिससे करे हर ग़म बया,
बाँटे सारी खुशियाँ,
वह माटी की एक गुड़िया।

घर....!!

खुशियों की अलमारी है घर,
रंगों की पिचकारी है घर,
प्यार की निशानी है घर,
खुशियों की अलमारी है घर।

सपना देखने की किताब है घर,
दीवारों पे हिसाबों की गिनती है घर,
सपनों से हक़ीकत की मंजिल है घर,
खुशियों की अलमारी है घर।

यादों से भरी रात है घर,
राहत भरी बात है घर,
मासूमियत की मुरत है घर,
मुश्किलों में हँसती सुरत है घर,
खुशियों की अलमारी है घर।

प्यार से सिंचा मकान है घर,
ज़िंदगी की सौगात है घर,
परम्परा से मुलाकात है घर,
खुशियों की अलमारी है घर।

एक ख्वाब...

एक ख्वाब...

सोने का बुलबुला है एक ख्वाब…

पानी सा चुलबुला है एक ख्वाब…

रातों की नींद उड़ा ले,

दिल का चैन चुरा लेता है....

एक ख्वाब...

सोने का बुलबुला है एक ख्वाब।

हक़ीकत को खुशियों से भरने का सिलसिला है

एक ख्वाब...

दुनिया से जंग करा दे,

हालातों को मात गिरा दे,

हाथों को तलवार बना देता है...

एक ख्वाब...

पानी सा चुलबुला है एक ख्वाब।

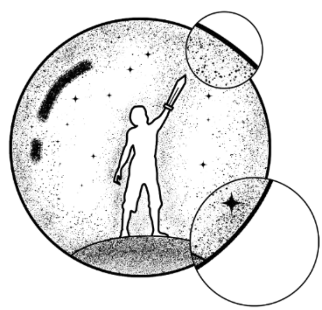

मुसीबतों से इश्क करने का बहाना है ख्वाब,
ज़मीन से आसमान को छुने का हौंसला है ख्वाब,
गिरने पे उठना मुकर्रर करता है…
एक ख्वाब..

सोने का बुलबुला है...
पानी सा चुलबुला है…
एक ख्वाब....

मैं कभी रुकता नहीं

वक़्त ने कहा – मैं कभी रुकता नहीं...
किसी की याद में थमता नहीं,
आहे भर कर रोता नहीं...
चलना मेरा काम – मैं कभी रुकता नहीं...

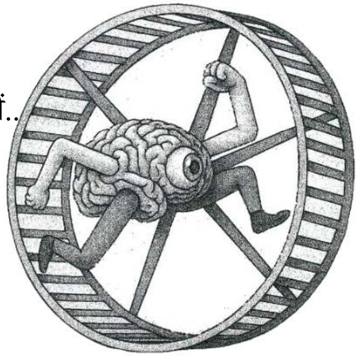

लिखता हुँ हर किसी की कहानी...
आगे पीछे सब मुँह ज़ुबानी।
सच्चाई से मुँह मोड़ता नहीं,
चलना मेरा काम – मैं कभी रुकता नहीं...

कुछ कहते दोस्त मुझे...
कुछ की है दुश्मनी..!
दोस्त कहे वो सफल हो जाते,
दुश्मनी भारी पड़ जाती…

भटके-भुले वापस आये,
माफी है माँगी..
चलना मेरा काम – मैं कभी रुकता नहीं...

सभी आये, सभी गये, सबसे है पहचान मेरी,

अहमियत समझते है सभी, पर ना करते कद्र मेरी।

फिर पछताते दुखड़ा रोते... कहते मैं सुनता नहीं..

मैं… सुनता नहीं.... ?

पर चलना मेरा काम – मैं कभी किसी के लिये रुकता नहीं...

कुछ आते, आँसू लेके कहते… “ऐ वक़्त रुक जा यहीं..!”

कुछ आते, खुशियाँ बँटोरे कहते… “आगे ना बढ़ थम जा यहीं..!”

ना खुशियाँ ना आँसू रोके मुझे,

नहीं है ये शैतानी मेरी...

चलना मेरा काम – मैं कभी किसी के लिये रुकता नहीं...

अग्नि परीक्षा

अनोखा ये जग है अनोखी इसकी बात
रोज़ नया सवेरा.... रोज़ नई रात.. ।
रोज़ हमें दे नई नई शिक्षा,
लेती है हर मोड़ पे अग्नि परीक्षा ।

लोग यहाँ के बड़े रंगीन,
कई हैं रंग इनके,
जो देखे हो जाते संगीन ।
फिर भी देते बेहिसाब प्रेम की भिक्षा
लेते हैं हर मोड़ पे अग्नि परीक्षा ।

कहते हैं आगे बढ़ो हम है तुम्हारे साथ,
मर्यादा के नाम पर फिर वही छोड़ देते हाथ ।
फिर भी हो जाती है अमूल्य व्यक्तित्व की वर्षा...
लेती है हर मोड़ पे अग्नि परीक्षा ।।

सुख-दु:ख के है अनोखे साथी,
दुख में हो जाते एक... जैसे दीया और बाती ।
सुख में फिर भी कर लेते हैं थोड़ी ईर्ष्या...
लेते है हर मोड़ पे अग्नि परीक्षा ।

जैसे भी है, है ये अपने..
अकेलेपन को न देते भटकने।
परिवार की है ये अनोखी कक्षा,
लेती है हर मोड़ पे अग्नि परीक्षा।

हिम्मत

वो अक्सर मेरे सपनों में आती है…
मुझे खुब हँसाती है,
एक अलग ही दुनिया बसाती है,
वो अक्सर मेरे सपनों में आती है।

रात के अकेलेपन की साथी है,
खूब गप्पे लड़ाती है,
लोरियाँ भी सुनाती है,
वो अक्सर मेरे सपनों में आती है।

डर से प्यार करना सिखाती है,
हक़ीकत को झुठलाना... गलत बताती है,
उड़ान भरने का हौंसला जगाती है,
वो अक्सर मेरे सपनों में आती है।

सुनके यह पंक्तियाँ लोगों ने मुझसे पुछा…
“नाम क्या है उसका ?”
“किसका…? मैंने पूछा”

वो… जो अक्सर तुम्हारे सपनों में आती है?

“हिम्मत,” मैंने कहा।

मेरे सपनों में अक्सर हिम्मत आती है।
मुझे जीना सिखाती है।

सबर

सबर सबर का खेल है सारा,
सबर कभी ना किसी से हारा।
सबर के आगे हर ग़म हारा,
कभी ना चढ़ता उसका पारा।

खेल सबर का सबसे न्यारा,
जो खेले बन जावे प्यारा।
सबर ने जीवन को सँवारा,
जो टूटे... कर दे रिश्तों को खारा।

सबर सबर का खेल है सारा,
सबर कभी ना किसी से हारा।

सबर करे वो जीते हर बाज़ी,
ना करे उस से अपने भी ना होवे राज़ी।
हिले सबर हिले सहारा,
डूब जावे मुसाफिर पा के किनारा।

जो खोवे सबर तो चढ़ता पारा,
मीठे पानी को भी कर दे खारा।
टूटे सबर टूटे सपनों का सितारा,
बंद हो जावे खुशियों का पिटारा।

सबर सबर का खेल है सारा,
सबर कभी ना किसी से हारा।

प्यार की पहली झनक

हमारा है...

किसी की आँखों का तारा है,
तो किसी को वो जान से प्यारा है।
किसी के जिने का सहारा है,
हर कोई उसके प्यार का मारा है।

कोई खुशियों का पता पूछें, तो उसकी ओर इशारा है।
जीना उसके बिना किसी को ना गँवारा है,
वही सफर की मंज़िल, तो वही किनारा है।

किसी के लिये, सारे का सारा है…
तो कोई उसे देखके मुस्कुरा रहा है।

मगर… पूछे हमसे कोई,
तो कहे… बस्स... हमारा है।

तुम आओगी क्या??

दिल ने तुम्हें पुकारा है, दिल से..
तुम आओगी क्या??

उसने एक मकान बनाया है।
तुम घर सजाने, आओगी क्या??

बहुत धीमे से प्यार का इज़हार किया है।
तुम सुन लोगी क्या?
जो मैं हाथ आगे बढ़ाऊँ,
थाम लोगी क्या?

किसी कोने में बैठकर जो मैं आँसू बहाऊँ,
मायूसी को मैं ना छुपाऊँ,
तुम सिने से लगाओगी क्या?

जो बड़ी शिद्दत से पुकारुँ तुम्हें…
तुम आओगी क्या?

मैं जो घर जरा देर से आऊँ।
डाँट लगाओगी क्या?

तुम्हारा गुस्सा शांत करने के लिये मुर्गा बन जाऊँ।
तो नोंक झोंक वाली चिंता जताओगी क्या?
दुसरी लड़कीयों संग नाच नचाऊँ।
तुम जलोगी क्या?

थका हारा तेरे दिल की छाँव में,
मैं आऊँ... तुम सुलाओगी क्या?

तेरे चेहरे पे मुस्कान लाने के लिये, जो मैं शेर सुनाऊँ।
तुम प्यार से मुस्कुराओगी क्या?

जो आज मैं पुकारुँ तुम्हे...
तुम आओगी क्या?

कभी तुम धूप, मैं छाँव।
तुम खारी बिस्कुट तो मैं नरम पाव।
ऐसे बेमतलब की शायरी तुम्हें सुनाऊँ,
तो... तुम “हट् बकवास...” युँ कह कर,
ज़ुल्फे उड़ाते हुए जाओगी क्या?

मेरे इन सारे सवालों का तुम जवाब “हाँ” में दोगी क्या?

जो आज ज़िंदगी भर के लिये तुम्हें पुकारु...
तुम आओगी क्या?

बस बैठेंगे

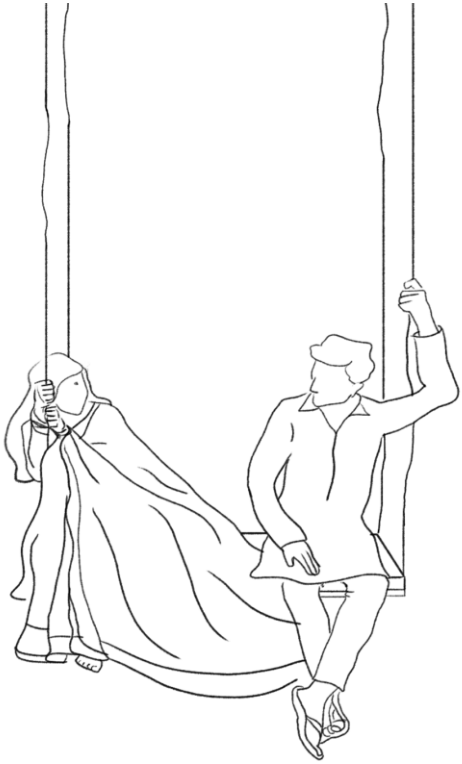

एक शाम तुम आना...
समंदर किनारे हाथ पकड़ कर बैठेंगे
बस बैठेंगे….

यूँ ही पैर हिलाते हुए ,
आँखे बंद कर, हवाओं में खोकर
मुस्कुराएँगे...
बस्स बैठेंगे…

सुरज ढ़लते ढ़लते..!
शाम वाली कॉफी पियेंगे।
तुम मेरे कंधे पर सर रख लेना…
ढलती हुई शाम के उन पलों को संजोना,
हम गुन गुनाएँगे..! खिल खिलाएँगे..!
बस्स बैठेंगे…

कच्चा आम खा कर
बचपन की यादें ताज़ा करेंगे।
उसके लिए लड़ेंगे,
आड़े टेढ़े मुँह बनाएँगे…

बस्स… बैठेंगे।

हम कुछ नहीं कहेंगे।
एक दुसरे के साथ को महसूस करेंगे।
अनकहे वादे निभाएँगे,
कुछ नए वादे करेंगे,
बस्स बैठेंगे…

खामोशी बहुत कुछ कहेगी... हमसे।
शायद पुराने घाव हरे करेगी,
हम एक दूसरे को कस्स के गले लगा लेंगे।
बस्स… बैठेंगे…

मैं तुम्हारी ज़ुल्फे कानों के पीछे सरकाऊँगा,
तुम्हारा मुस्कुराता चेहरा अपने मन में बसाऊँगा।
हम एक दूसरे की आँखों में देखेंगे,
बस्स बैठेंगे।

चलो अब एक दिन वक़्त निकाल लेना..!
मेरे साथ चल देना..!
समंदर किनारे हाथ पकड़ के,
एक शाम गुजारेंगे..!
बस्स… बैठेंगे..!

फुलवारी

तुम उस उम्र में मिले,
जिस उम्र में, उम्र का कोई हिसाब न था।
सादगी थी, सुकून था,
उस उम्र में खुशियों का कोई सबब ज़रुरी न था।

जहाँ खुशियाँ, छोटी छोटी बातों में मिलती थी।
समय की ना कोई गिनती थी।
प्यार करने कराने की ना कोई बिनती थी।
तुम मेरा ठहराव बन के उस उम्र में आई,
जिस उम्र में मेरी उम्र से बनती ना थी।

उम्र का असर गहरा था।
सवालों का छाया पहरा था।
उस उम्र में, तुम मेरा जवाब बन कर आई।
जिस उम्र में, मैं सवाल समझा भी न था।

एक सादासा फूल लगाती थी, तुम बालों में जब,
तो सारा आँगन महकता था।
खुशबू जो छुले, तो मन चहकता था।
तुम उस उम्र में, इस कलियारे की,

सबसे सुंदर कली बनकर आई…
जब मेरे मन का अंकूर फूटा भी न था।

उम्र भर का साथ रहा…!
उम्र भर उम्र का ख़याल रहा…!
तुम्हारे साथ.. उस उम्र से, इस उम्र तक का सफर सुनहरा रहा।

लेकिन…
अब जो इस उम्र में बिछड़ी हो तुम,
सारी उमर निकल जायेगी दिल को बहलाने में,
कैसे ढुँढू… मैं कोई रंग, अब ज़माने में।

ख़ामोश हो गया यह कलियारा...
खो गई वो महकती कली मेरे विराने में।
अब और एक उम्र लगेगी इसे वो सुगंध भुलाने में…

तुम उस उम्र से, इस उम्र तक साथ रही…!
यही दुआ रही इस फुलवारी पे...!!

कहानी खट्टे-मीठे प्यार की...

मैं ऐसे ही कहीं शायरी सुना रहा था,

अचानक मेरी नज़र एक लड़की पर पड़ी...

और बस...

उसके आस-पास का सारा थिएटर ब्लैक एंड व्हाइट हो गया…

लगा मुझे… कि मुझे, उससे प्यार हो गया।

तो बस मैंने भी उसे इम्प्रेस करने की ठान ली।

दिल के कोने से एक कविता उधार ली।

और देखकर उसे मैंने कहना शुरू किया…

कि...

"समंदर से न पूछो कि गहराई क्या होती है...!

दिल से न पूछो कि सच्चाई क्या होती है...!

जब दोनों की गहराई में जाओगे,

तब जानोगे कि खूबसूरती क्या होती है..."

वो भी बड़े शायराना निकले..

इशारा समझकर जवाब दिया —

"तुम समंदर की बातें करते हो…

तुम समंदर की बातें करते हो…
लोग तो आँखों में डूब जाते हैं..."

वाह..! वाह...!
ये सुनकर लगा,
उन्हें एक और कविता सुनाऊ,
दिल का थोड़ा दर्द बताऊ,
और अपनी तरफ खींच लाऊ।

तो अर्ज़ किया...!!

"आसमान से न पूछो कि ऊँचाई क्या होती है,
और रेगिस्तान से न पूछो कि तन्हाई क्या होती है,
जानो दिल का दर्द हमारा,
थाम लो ना.. हाथ हमारा"

ये सुनकर कटाक्ष में कहा उन्होंने —
"हाँ, अब आगे...
फिर तुम चाँद सितारे लाने की बातें करोगे,
और ऊँचाई से इतना डरोगे…!!
क्या यूं ही, बेमतलब की बातें करोगे..?"

"तुम यहाँ-वहाँ इशारे करते हो, सीधे-सीधे क्यों नहीं कहते...
कि प्यार करते हो..!!"

मैं बोला —
शायर हूँ मोहतरमा, तो इसी अंदाज़ में कहूँगा,
तुम ध्यान से सुनती रहना,
हर शेर में इशारा करूँगा।
जो सीधे-सीधे कह दूँगा,
तो ये होठों पे छाई मुस्कान.. वो शरमाना, कैसे देखूँगा..?

वो और शर्मा गईं और कहा —
तुम्हारे अंदाज़ में कह रही हूँ, गौर फरमाना...

"साँस लेकर देखो इन खुली हवाओं में,
जानोगे कि आज़ादी प्यार की क्या होती है...
लो थाम लेती हूँ हाथ तुम्हारा…
हर दर्द भुला बैठोगे..."

मैं मुस्कुराया... और… मुस्कुराता ही रह गया...
इसी खट्टी-मीठी तकरार ने हमें प्यार के धागे में पिरो दिया...
फूल लेकर उसके बाज़ू में बैठे लड़के ने उसे पाने का मौका खो दिया
और ग़म के मारे रो दिया…!!

आज उन्होंने मुझे डांट लगाई है...

कहते नहीं हम आसान शब्दों में,
पर बयां सब कुछ करते हैं,
समझ में उन्हें ही आता हैं,
जो हमारी परवाह करते हैं।

यह सुनकर लगा उन्हें,
कि हमने उनकी मोहब्बत पर शंका जताई हैं…!
इसी बात पे ,
आज उन्होंने मुझे डांट लगाई हैं...

प्रिये...
हम और आप...
हम और आप, तो शब्दों में बातें कम ही करते हैं।
यूही नहीं, हमारे सन्नाटे चीख-चीख कर हाल-ए-दिल बयां करते हैं।

शब्दों का अर्थ करूं या अर्थ में शब्द भरूं... सारांश सभी का एक हैं।
शब्दों के मोल में आप हमारे प्रेम को टोल कर यूं खफा ना कीजिए,
हम तो बस इसी खूबसूरती के दीवाने हैं...
अब थोड़ी हया तो कीजिए...!

वो बोले...

"देखा, फिर यूं बातें करके आप हमें सता रहे हैं...!"

चलो फिर भी माफ किया क्योंकि,

दिख रही आपकी आँखों की सच्चाई हैं...

हंसकर मैंने कहा, "वाह! क्या संगिनी हमने पाई हैं,

आज आँखों की सच्चाई पर भी…

हमने डांट खाई हैं।"

बस अंत में इतना कहना चाहूंगा की...

इन दीवारों ने की हमारी कहानी की रखवाली हैं,

दूसरों की नजर से बचाकर रखी उसने यह अलमारी हैं।

बस यूं ही कुछ बोलकर... तो बहुत कुछ ना बोलकर...

चल रही सवारी हैं।

खट्टी-मीठी लड़ाई आज भी जारी हैं।

चाहे गलती किसी की भी हो,

माफी मांगने की हमारी पूरी तैयारी हैं...

इसीलिए भी…

आज उन्होंने हमे डांट लगाई हैं।

मेरे चाँद की कहानी...

मेरी हर चाल में हो तुम,
दिल की हर बात में हो तुम,
ज़ुबां पे आने वाला हर नाम हो तुम,
सप्त सुरों की ताल हो तुम।

तुम ही हो हर पेड़ की छाया,
मेरा दिल है तुमपे आया,
रूप तुम्हारा मन को भाया,
ऐसा नज़ारा कहीं न पाया।

ये देख कर चाँद ज़मीन पर आया,
बोला, मुझसे ज़्यादा नूर किसने है पाया..??
सोच के ऐसा ग्रहण लगाया,
गुरूर में अपना नूर गंवाया।
देख के तुमको वो घबराया,
उल्टे पाँव लौट के आया।

क्योंकि...

चाँद सा है मुखड़ा तेरा,

चाँद को नज़र लगाता।
एक नज़र जो देखे इसको,
चाँद को भूल ही जाता।
खिलता है जब रूप तेरा,
चाँद भी है शर्माता।
आती हो जब तुम सामने,
वो भी छुप है जाता।

चाँद बोला –
मुस्कुराती हो जब तुम, चाँदनी फीकी पड़ जाती,
आती हो जब तुम सामने, हालत ढीली हो जाती।
गुरूर था...
गुरूर था, मुझे अपने नूर पे, पर तुमने मुझे सिखलाया,
आसमान के चाँद पर दाग को है पाया।

निर्मल तुम्हारे मन ने मुझको बेदाग होना सिखाया।
भूल हुई.. समझ को आया, तुमसे अब न मैं घबराया।
करके दीदार मन हल्का हो आया, लगे ग्रहण को दूर भगाया।
अपना नूर वापस पाया, शीतल मन को फिर जगाया।

एक हुई धरती और आसमान की चाँदनी,
रोशनी से भरा जहाँ मैंने पाया...!!
रोशनी से भरा जहाँ मैंने पाया...!!

आ आं... अभी ख़त्म नहीं हुआ..!

देख के ये सारा नज़ारा धरती के चाँद पे दिल में हारा,
लिखी कविता, कागज़ का गोला दे मारा।
वो हँसी, मैं लाल गुलाब हुआ... शर्म का मारा।

आसमान से चाँद फ़रमाया –
"मिल गया जीवनसाथी तुम्हें तुम्हारा..!"

फिर कभी शुरू नहीं हुई ऐसी कहानी दोबारा,
क्योंकि ख़त्म ही नहीं हुआ रिश्ता हमारा।

ज़ख्म

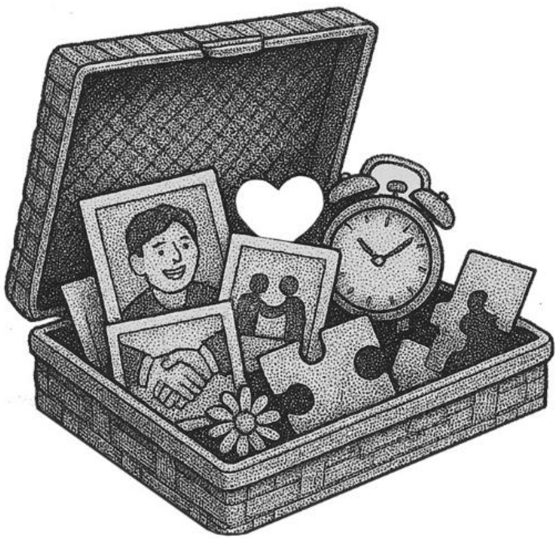

तुम ना मिली...

आज पुरानी यादों की टोकरी खुली…
कहानी मिली, खत मिले, मिली मुस्कुराहट मेरी…
मिली मुझे मेरे हसीन पलों की निशानी,
मिली मुझे मेरी दुनिया सारी।

कुछ दिल के टुकड़े भी मिले तो कुछ वादे मिले..!
वो मुलाकाते मिली, अधुरी बातें भी मिली..!
बहुत तलाशा पर तुम ना मिली।

कागज़ पर छपा तुम्हारा हाथ मिला,
उसपे लिखा "सदा तुम्हारी" यह वादा मिला..!
दर्द मिला, मरहम भी मिला, मिला इंतजार मुझे,
बहुत ढुँढ़ा पर तुम्हारा साथ ना मिला।

तेरा अहसास मिला, मिली परछाई तेरी,
मिली मुझे, मेरी ज़िंदगी की कड़ियाँ सारी,
सुलझ गई हर पहेली की गुथ्थियाँ पुरानी…
मिली मुझे इस अधुरी कहानी की दास्तान सारी।

यादों की इस टोकरी में बसी है कहानी हमारी।

आज...

यादों से भरी टोकरी में दुनिया भर की चीजें मिली..!

बहुत तलाशा… पर तुम ना मिली..!

तुम ना मिली....

तुम ना मिली....

तुम ना मिली....

पुरानी चोट याद आई है...!

आज फिर कोई पुरानी चोट याद आई है…
सीने में मानों किसी ने आग लगाई है,
भरी महफ़िल में मुस्कुराना, जैसे जान पे बन आई है,

आज फिर कोई पुरानी चोट याद आई है।

हल्की हल्की हवाओं ने भी मानों गालों पे थप्पड़ लगाई है,
दिल के ज़ख़्मों से आंखे भर आई है।
आँसूओं ने घर के उस कोने से आस लगाई है,
जहाँ किसी के नज़र में ना आई यह तन्हाई है।

आज फिर कोई पुरानी चोट याद आई है।।
आज फिर कोई पुरानी चोट याद आई है।।

कोई नहीं... !!!

रूलाया ना कर तू मुझे ऐसे,
मुझे चूप कराने वाला कोई नहीं।
कुछ ऐसे है हालात के क्या कहे,
कैसे कटेगी यह रात..? जिसमें तुम नहीं।

कुछ ख़ालीपन सा है इन हवाओं में,
जैसे ढूँढ़ रही है अपना कोई…
दर्द छुपा है सीने में, पर चेहरे से मुस्कान गई नहीं।
कुछ ऐसे है हालात के क्या कहे,
यह कैसी मंज़िल जिसका रास्ता तुम नहीं ?

मेरी आवाज़ खामोशी में ढ़ल जायेगी एक दिन,
तुम सुनती रहना… फिर भी… खामोशीं से एक दिन।
ऐ ज़िंदगी…! युँ रूलाया ना कर तू,
मुझे चुप करानेवाला कोई नहीं... !!!

पागल हुए जा रहा हूँ

तेरे प्यार में युँ पागल हुए जा रहा हूँ…
के तेरे अहसास को भी हक़ीकत मान रहा हूँ।
नहीं है तु सामने...
नहीं है तु सामने...
फिर भी.....!
ना जाने गले लगा कर रोए जा रहा हूँ…
पागल हुए जा रहा हूँ।

नज़र से नज़र मिलाकर,
नज़रे चुरा रहा हूँ।
तस्सली के लिये ही सही, दिल बहला रहा हूँ।
यह तेरा कैसा जादू?
जो मैं खुदसे ही लड़े जा रहा हूँ…

हक़ीकत सामने है,
फिर भी उसका सामना नहीं कर रहा हूँ।
अपनी ही दुनिया बना रहा हूँ…!
क्युँ जी रहा हूँ उन पलों को, जो मुमकिन नहीं…
क्युँ जी रहा हूँ उन पलों को, जो मुमकिन नहीं…
यह तेरा कैसा प्यार? जो मैं हक़ीकत से हार रहा हूँ।

बस्स…!

तेरे प्यार में कुछ ऐसे पागल हुए जा रहा हूँ।

ग़म के बादलो मैं घिरा रहता हूँ,

कोरे बदन पे बारिशों से भिगा रहता हूँ…

कोई पूछे हाल मेरा तो हसे जा रहा हूँ।

तेरे प्यार में कुछ युँ होश गवाँ रहा हूँ,

के तेरे अहसास को भी हक़ीकत मान रहा हूँ।

ता उम्र चलने का वादा कर, तुम वफा कर गये,

ऐसे वादे को अकेले निभा रहा हूँ।

बहुत नज़दीक आकर जो बिछड़े हैं,

तुम लौट कर आओगे अगर...

तो सह नहीं पाऊँगा,

क्या ऐसी खुशियों को मैं बर्दाश्त कर पाऊँगा?

यही सोच सोच कर रोज़ मरे जा रहा हूँ।

बस्स युँही तेरे प्यार में पागल हुए जा रहा हूँ।

मैं पागल हुए जा रहा हूँ…!

बचाया ना कर...

खुद को इतना भी ना बचाया कर,
बारिश हो तो भीग जाया कर…

कल की चिंता में, अपने आप को डुबाया ना कर,
आज ही ज़िन्दगी है… यह सोच कर जी लिया कर।

कहा लिखा था साथ हमेशा का,
अब जो खो ही दिया..
तो अपने आप को युँ अंधेरे में छुपाया ना कर,
बारिश हो तो भीग जाया कर।

मैं सूरज के पहले किरन से,
चाँदनी की आख़िरी लहर तक।
जगमगाते सितारों के नीचे,
तेरी लेहराती ज़ुल्फ़ों के पीछे, हमेशा तेरे साथ हूँ…
तु मुझे याद करके मुस्कुराया कर।

जब ख़ामोश हो दुनिया सारी,
तु ख़ामोशी से रिश्ता बनाया कर।
लफ़्ज़ो की चाह में अपने आप को युँ सताया ना कर,
बारिश हो तो भीग जाया कर।

चले जा रहा हूँ।

तुम मेरे ख़यालों से हक़ीकत में ना आ सकी…
यह कैसी रात, जो सुबह में ढ़ल न सकी?
बिछाएँ मैंने हज़ारो दिए उम्मीद की लौ से,
पर यह कैसी माचिस की तीली जो ना जल सकी।

इन अँधेरी गलियों में क्युँ भटक रहा हूँ मैं…
यूँ गहरी नींद मैं क्युँ सो रहा हूँ मैं…
मना रहा हूँ खुद को उठने के लिये,
यह कैसा सपना जो डरने से भी टूटा नहीं..?

तेरी आँखों के नशे में डूब कर,
दिवाना हुआ घुम रहा हूँ।
सब कुछ धुँधला दिखाई पड़ रहा है,
फिर भी पढ़े जा रहा हूँ।
यह कैसी मदहोशी…?
जो सारी उतरने पर भी, मैं लड़खड़ा रहा हूँ।

अब कुछ बचा नहीं तो,
परछाई से भी मुकाबला कर रहा हूँ।
दरवाज़ा होते हुए , खिड़कीयों से आ-जा रहा हूँ।

इस दौड़ में अकेले भाग रहा हूँ।
खुदसे जीत कर खुद ही हार रहा हूँ...

यह कैसा भ्रम ?
यह कैसा जाल ?
जो मैं बुनते बुनते खुद ही उलझते जा रहा हूँ...
बस चले जा रहा हूँ।
बस चले जा रहा हूँ।

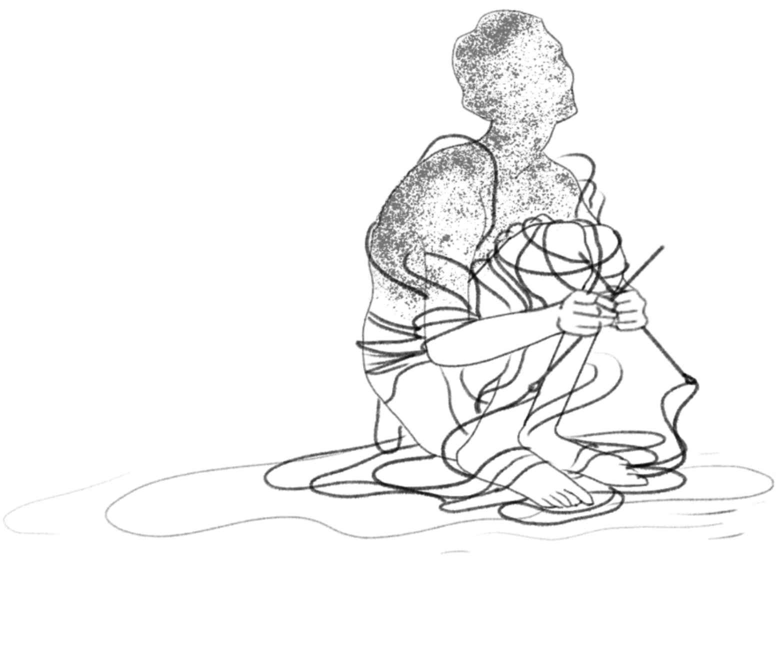

उसके पास तू

मेरे पास तेरा अहसास है,

उसके पास तू।

मेरे पास जज़्बात है,

उसके पास तू।

तेरा खत, तेरी बातें और वह प्यारी प्यारी मुलाकाते,

ये सब है, मेरे पास,

बस नहीं है तो तू…!!

मेरे पास यादें है,

उसके पास तू।

चॉकलेट के रॅपर से, बिल के पेपर तक,

मेरे पास सब है।

मेरे पास सहारे का एहसास है,

उसके पास तू।

बारिश का पानी है, भीगने की बारी है,

रोमांस जारी है।

मेरे पास रेनकोट है,
उसके पास तू।

खत में लिखी बाते है,
उसमें छुपी प्यार की सौगाते हैं।
सारी निशानी है, प्यार भरी कहानी है।

किस्से है, सपनों के हिस्से है…
मेरे पास सब है, नहीं है तो बस तू।

मेरे पास बस प्यार का एहसास है…!
उसके पास तू…!
उसके पास तू...!

मरहम

यह कौनसी है बारिश..??

बड़े दिनों बाद आज मेरे शहर में बारिश हुई…!
यह बरसती बूँदे, मेरी सारी रंजीशे बहा ले गई.
आज बहुत ज़ोर से बारिश हुई।

यह लहराती हुई हवाएँ , मुझे दूर उड़ा ले गई,
मेरे पंख पर लगी धूल, यह बारिश बहा ले गई,
मेरे शहर में बड़े दिनों बाद,
आज बहुत ज़ोर से बारिश हुई।

मैं बादलो से खेलता, पंछियों संग गुनगुनाता,
बस मुस्कुराता हुआ, सब कुछ भूल गया।
मानो यह बारिश, मेरी यादों को मिटाते चली गई।
मैं बूँदों संग खेलता रह गया,
और यह सारा ग़म बहा ले गई।

दे गई मुझे एक नया बचपन…
इंद्रधनुष सी किरणों से, खेले है मेरा मन,
थम गया यह तुफ़ान, अब बची है,
तो बस यह प्यारी सी सुगंध।

एक आख़िरी बूँद जो छलकी मेरे गालो पर,

नहीं बचा कोई अतीत एक चुटकी भर…!

मैंने एक नया बीज बोया,

मन की गीली हुई इस मिट्टी पर।

मेरी ज़िंदगी का यह सारा नमक,

वह सभी कड़वाहट, आज धुल गई…!

बड़े दिनों बाद जो आज,

यह मेरे शहर में, बहुत ज़ोर से…

बारिश हुई…।।

बारिश हुई…।।

तन्हाई का मौसम

तन्हाई के इस मौसम में,
ना जाने यह फूल कहाँ से खिला है…!
इन अँधेरी गलियों में एक रोशनी सी दिखाई दे रही है।

क्या यह तुम हो??

या मेरे दिल ने फिर कोई फरमाइश की है।
और तुम मेरी यादों में चली आ रही हो... !!

क्या यह सच में तुम हो??

लगता है आज फिर बारिश होने वाली है..!
इन आँखों में नमी छाने वाली है।
तुम्हें देख कर आज...
इस तन्हाईके मौसम में एक कली खिलने वाली है।

हाँ.. हाँ.. यह तुम ही हो…!!

यह आँसुओं की बारिश, अँधेरे की रोशनी,
मेरे दिल की धड़कने, इस बात की गवाही है।
के आज तुमसे नज़रे मिलाई है।

मेरी तन्हाई के इस मौसम में,
आज इस फूल को तुमने फिर से मेहक दिलाई है।

आखरी कोशिश

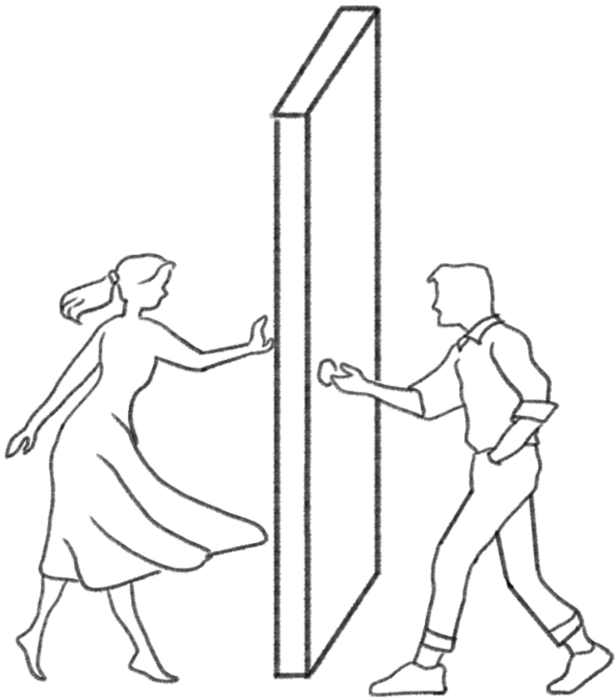

चलो एक बार फिर मिलते हैं ।

चलो एक बार फिर मिलते हैं..
मैं तुम्हारा हाल पुछूँगा,
तुम मेरा नाम.. ।

एक दूसरे को फिर समझते हैं,
हाथ पकड़कर सड़क पार करते हैं ।
गुनगुनाते हुए एक बार फिर ,
ज़िंदगी को समझते हैं ।
चलो एक बार फिर मिलते हैं…

पिछले हिसाबों को चुकता करते हैं,
एक नई कहानी लिखते हैं ।
नये सफर, नई मंज़िल, नया हिसाब,
चलो वही से फिर प्यार करते है ।
एक बार फिर मिलते हैं…

उस ही मोड़ पर, वो ही चाय पर,
नई चुस्कियाँ लेते है ।
पुरानी कहानियों से नई सिख लेते है ।
आज एक बार फिर मिलते हैं…

एक आइसक्रीम को शेयर करते हैं,
दुसरी के लिये झगड़ते है।
विंड़ो पे बैठ के तुम नज़ारा देख लेना,
मेरी आंखें तो तुम्हें देखती है।

चलो नए ख्वाबो की ज़रूरत नहीं,
पुराने ही मुकम्मल करते हैं।
चलो ना…
एक बार फिर उसी मोड़ पे मिलते हैं।
मैं तुम्हारा हाल पूछ लुँगा,
तुम मेरा नाम।

उम्मीद

- एक नया नज़रिया

यूँ ही गुज़र जाते है

ज़िंदगी की छोटी छोटी बातें हम अक्सर भूल जाते है,
उन्हीं में खुशियाँ है यह समझ नहीं पाते।
कहानियों में, किस्सो में,
बस्स... खो जाते हैं।
ज़िम्मेदारियों के हिस्सो में, हम बँट जाते हैं।
भूल जाते हैं जीना आज में है,
चिंता बिते कल से… कल की… करने में,
हम यूँही गुज़र जाते हैं।

अल्फ़ाज़ो की लड़ाई में,
जज़्बातों की कढ़ाई में,
यूँही उलझे रहते हैं।
पैसा कमाने की धून में,
पहले ना आने के ग़म में,
हम डूबे रहते हैं।
भूल जाते हैं की हमसफर के प्यार से,
परिवार के साथ से ज़िदगी चलती है।
हम...
सफर के शुरुआत से अंत तक… रोते रोते…
यूँही गुज़र जाते हैं।

कुछ पंक्तियाँ ऐसी भी

सारा शहर देख लिया… सब देख लिया…

काफी न था।

सबसे मिला, हर किसी से बातें की,

मगर कुछ हासिल ना हुआ।

लेकिन...

जबसे आँखों में देखा है तेरी…

तू ही मेरा शहर हुआ,

काफी हुआ…

तुझसे बातें की तो सुकून हासिल हुआ..

सब हुआ...!

काफ़ी हुआ...!

चेहरा एक कलम है, खूबसूरती उसकी लिखाई।

दिल मुलायम बिस्तर है, ममता उसकी रजाई।

आँखे खुली किताब है, कहानी में उसकी सच्चाई।

अऽऽम्... अऽऽम्...

कहते कहते अटक गया, लगा अब होगी पिटाई।

आगे उससे कुछ कहूँ.. की अलार्म की घंटी दी सुनाई…

(बच गया....)

तुम यूँ …ना रुठ कर, डराया ना करो।
यूँ चूप रहकर हमें सताया ना करो।
लड़लो… लड़लो थोड़ा सा…
रूठ जाओ... मेरी जान...
पर यूँ दिल की बात दिल में दबाया ना करो।

अच्छा चलो कोई बात नहीं...

अच्छा चलो कोई बात नहीं...
लफ़्ज़ों से ना सही,
तुम आँखो से बया किया करो…
पर ख़ामोश रह कर यूँ पराया ना करो।

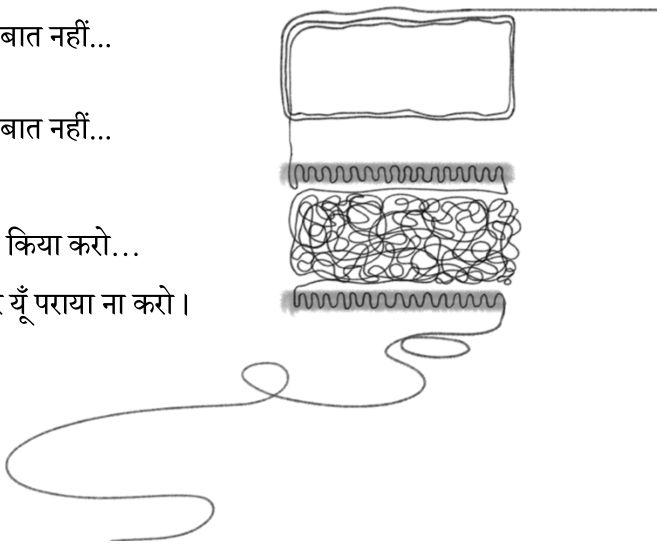

युही एक दिन पूछा उन्होंने कि,
कभी याद भी करते हो मुझे..?
मैंने कहा…
मेरे दिन भर की दौड़ का हिसाब हो तुम..!
मेरी ज़िंदगी की सबसे सुंदर किताब हो तुम..!

याद रखना… भुला देना… ये सब तो बातों का खेल है,
ज़िंदगी को भला कैसे भूलेगा कोई..!

मेरी ज़िंदगी का हिस्सा नहीं, ज़िंदगी हो तुम..!

अगर हम नीचे देखकर चल रहे है…तो,
इसका यह मतलब नहीं के,
हम आपसे आँखे नहीं मिला सकते।
हम तो बस सँभल के चल रहे हैं…
क्युँकी…
जो नज़रे मिली... तो..!
गिरना पक्का है।

ना तुमको खबर हुई, ना तुम समझ सके,
हम तुमपे धीरे धीरे मरते गये,
और तुम किसी और के प्यार में संवर गये।

सारे ज़माने को खबर थी मेरे इश्क-ऐ-ऐलान की,
न उनकी..! न मेरी..! नज़रें तू पढ़ सकी।
इस दास्ताँ में बस एक ही बात थी,
वो जो मैं ना केह सका… ना तू सुन सकी।

वो कहते है की अब हमसे प्यार नहीं करते,
कोई कहदे झूट है, तो इनकार नहीं करते।
दिल में तो अब भी हम है, बस इकरार नहीं करते।
अब हमसे प्यार नहीं करते,
वो कहते है की, अब… हमसे प्यार नहीं करते…

ज़िन्दगी के सफर में खुशियाँ और ग़म दोनों बराबर के हिस्सेदार है।
तो मैंने रब से खुशियाँ और ग़म दोनों ही मांगे..
अब मुझे क्या मिला गौर फरमाइयेगा…

रब से मैंने खुशियाँ मांगी उन्होंने तुम्हे दे दिया।
उनसे ग़म माँगा फिरसे तुम्हे दे दिया।
रब ने कहा – ज़िन्दगी के सफर के लिए तुम्हे हमसफ़र दे दिया।

मोहब्बत तो है लेकिन मिलना मुमकिन नहीं।
कैसे ?
मैं रेत का दरियाँ हूँ, तू समंदर की लहरे।
मैं रेगिस्तान में पलके बिछायें बैठा हूँ,
तू हवाओं से बातें करें।

हम जो इतना बोलते थे,
तुम्हारे जाने से अब ख़ामोश हो गये।
तुमने पीछे मुड़ के जो नहीं देखा,
हम बर्बाद हो गये।

सोचा चिट्ठी लिख कर तुम्हें बताऊँ,
प्यार कितना है।
फिर सोचा कहानी हमारी सदियों पुरानी,
नहीं ज़रूरत इसे चिट्ठी से याद दिलानी।

मैं इश्क का वो काजल हूँ,
जो आँखों की... खूबसूरती निखार कर
नज़र उतारता है।

बहुत दिन हो गये है तुमसे बिछड़े,
अब तुम्हें मिलने को दिल कर रहा है।
तुम उम्मीद बढ़ाओ ना मेरी,
तेरे दीदार को यह दिल तड़प रहा है।

सोचा ना था के रास्ते अलग हो जायेंगे,
मंज़िल तो एक ही थी पर हाथ छूट जायेंगे।

तुझे इल्म नहीं ए नादान,
किन मुश्किलों से गुज़र रहे हैं हम।
बहुत नज़दीक आकर तुमसे बिछड़े हैं
अब भला कैसे जिएँगे हम।

लगता था…
लगता था…यही हमें कि नहीं होगी सुबह.. इस रात की,
पर नए सूरज की नई किरणों ने नया सवेरा दिया हमें…
आज फिर ये नादान कोई गलती करने निकला है।

तुम जो यूँ बिन कुछ कहे चले जाओगे,
दिल को डर है लौट के नहीं आओगे।

अभी ज़ख़्म कुछ हरा सा है,
ख़ामोश है लब, आँखे झूँकी सी है।

नफ़रत के तराज़ू में अगर तोल रहे हो तो वज़न ज़्यादा रखिएगा…!
क्योंकि....
हमारा पलड़ा तो प्यार का है,
भारी है, भारी ही रहेगा।

अभी तो कुछ महिने हुए है,
आप बरसो की बात करते हो।
अभी तो पन्ने भी नहीं भरे,
तुम कहानियों की बात करते हो।

रफ़्ता रफ़्ता जाना है उनको, हमने...
रफ़्ता रफ़्ता जाना है उनको, हमने...
अभी अभी तो सपनों में आने लगी है वो,
तुम हकीकत की बात करते हो।

तू कहे, मैं ना मानू ऐसी कोई शर्त नहीं,
तेरा नाम आए वही हाँ है मेरी,
और कोई बात नहीं।

तुझ में हर कोई ढूँढे मुझे,
बस इतनी ही है पहचान मेरी।

तू है तो मैं हूँ,
तू है तो सब है…
और दुनिया की कोई औकात नहीं।

कितना भी साफ करलो,
आईना अपनी सच्चाई से मुकरता नहीं।

यहाँ वहाँ, कहाँ भी छुप लो,
अपनी परछाई से कोई बचता नहीं।

अरे मुखौटे पहने सभी चले,
यहाँ किसीका कोई भरोसा नहीं।

मौत को तो यूँही बदनाम करते है लोग....
ज़िंदगी से बड़ी कोई सज़ा नहीं।

अभी आपको अलविदा नहीं कहूंगा

मेरे गुजराती पाठकों के लिए एक बोनस है…!

मैंने किसी अपने के लिए… एक कविता गुजराती में लिखी थी,

आपको सुनाता हूँ।

कृपया नीचे दिए गए QR कोड को स्कैन करें,

आशा करता हु आप इस कविता को भी उतना ही प्यार देंगे।

आभार

यह पुस्तक बहुत समय से बन रही

थी — मुख्यतः इसलिए क्योंकि मैं इसे साझा करने को लेकर संदेह में था। लेकिन कुछ ऐसे विशेष व्यक्तियों ने मेरे इस संकोच को दूर करने में मेरी मदद की, और इसलिए...

कोमल भाटकर मैंम, आपका तहे दिल से शुक्रिया — आपके मार्गदर्शन और समर्थन के लिए। और उससे भी ज़्यादा, मेरी उलझनों और कविताओं को धैर्यपूर्वक सुनने के लिए, मेरी पहली स्वीकृत श्रोता बनने के लिए, और इस पूरी प्रक्रिया में मेरा साथ देने के लिए, जिसके कारण यह किताब आज आपके हाथों में है।

मेरी छात्रा अर्पिता गोल्लार, कवर पेज का आइडिया देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। एवं "हमारा है…" इस कविता के लिए इतना सुंदर स्केच साझा करने के लिए मेरी छात्रा, संजना चालक, आपका भी धन्यवाद।

और अंत में, मेरी प्रिय मित्र लब्धि मेहता को विशेष धन्यवाद — आपकी खूबसूरत और अद्भुत कलाकृतियों व चित्रणों के लिए। आपने मेरी भावनाओं को जिस खूबसूरती से समझा और उन्हें अपनी कला के माध्यम से उकेरा, उसके लिए दिल से आभार।